



MADHYAMIK STHAR KE VIDHYARTHIYO KE VIDHYALAY VATAVARAN KA SAMAYOJAN PAR PRABHAV KA ADHYAYAN

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन

Balwan Singh

Researcher (Education), Maharshi Dayanand Saraswati University, Ajmer (Raj.)

ABSTRACT

विद्यालय वातावरण जितना उत्तेजक तथा शिक्षा प्रधान होता है, बालकों में समझने की शक्ति भी उतनी ही अधिक होती है तथा बालकों में समायोजन का विकास भी तेजी से होता है। विद्यार्थियों में मानवीय गुणों का विकास करने तथा सुयोग्य नागरिक बनाने हेतु विद्यालय वातावरण महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विद्यालय वातावरण के अन्तर्गत अध्यापक का व्यक्तित्व पाठ्यक्रम, पाठ्यसहगामी क्रियाएँ, शिक्षण-विधियाँ, खेल मैदान तथा विद्यालय के भौतिक संसाधन आदि अनेक कारक सम्मिलित रहते हैं जो बालक के समायोजन पर प्रभाव डालते हैं। विद्यालय का वातावरण समायोजित एवं सकारात्मक होगा तो यह वातावरण विद्यार्थियों के सामाजिक, शैक्षिक एवं संवेगात्मक समायोजन को सकारात्मकरूप से प्रभावित करेगा। प्रस्तुत शोध पत्र इस समस्या पर प्रकाश डालने का एक प्रयास है एवं विद्यालय तथा उसके वातावरण का बालकों के समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव की तह तक जाने की कोशिश है।

KEY WORDS: विद्यालय वातावरण, समायोजन, माध्यमिक स्तर.

प्रस्तावना :

शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति का सर्वांगीण विकास होता है। सर्वांगीण विकास से तात्पर्य व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक एवं आध्यात्मिक विकास से है। शिक्षा व्यक्ति के लिए एक ऐसा अनुकूल वातावरण तैयार कर देती है जो व्यक्तियों के शारीरिक, मानसिक तथा नैतिक क्षमताओं के निरन्तर विकास में सहायक सिद्ध होती है। औपचारिक शिक्षा के सन्दर्भ में बालक के विकास का सम्पूर्ण दायित्व विद्यालय तथा वहाँ के संसाधन एवं वातावरण पर होता है। बालक प्रारम्भ में कोरे-कागज के समान होता है। समय के साथ वह पहले सरल विचारों को मन में धारण करता है तथा कालान्तर में विचारों से विचारों को जोड़कर अपने ज्ञान में वृद्धि करता जाता है। विद्यालय एक ऐसा स्थान है जहाँ घर से अलग विद्यार्थियों की सूचना एवं ज्ञान के हस्तान्तरण, उनकी विभिन्न विषयों से सम्बन्धित सम्प्रत्ययों की समझ के विकास के साथ उन्हें भविष्य में समायोजन हेतु वांछित कौशलों में प्रवीण बनाने हेतु औपचारिक तरीकों से अवगत कराता है।

शिक्षा ग्रहण करने का मुख्य स्रोत विद्यालय है, जहाँ विद्यार्थी समायोजन करने की प्रक्रिया को सिखता है। कहा जा सकता है कि अच्छे समायोजन वाला व्यक्ति भविष्य में सफल होता है और वह स्वतंत्र विचार एवं आत्मविश्वास से पूर्ण होता है। विद्यालय में शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों क्रियाशील रहते हैं। आज बढ़ती जनसंख्या और जीवन की व्यवस्था के कारण विद्यालयों का महत्व और भी अधिक है। विद्यालय वह पवित्र हवलशाला है जिसमें शिक्षकों के मस्तिष्क में उपस्थित ज्ञान एवं अनुभव का हवन होता है और उसकी ज्वालाओं से सुनागरिकों का निर्माण होता है। विद्यालय विद्यार्थियों को जीवन का वास्तविक अनुभव प्रदान करते हुए उनमें ज्ञान का उचित उपयोग, अर्न्तनिहित क्षमताओं का विकास, शैक्षिक ज्ञान की अभिवृद्धि तथा नैतिक एवं चारित्रिक विकास करने के साथ-साथ शैक्षिक उपलब्धि एवं उचित समायोजन स्थापित करने के लिए अभिप्रेरित करता है। बालक का व्यक्तित्व बाल्यावस्था से किशोरावस्था तक विकसित होता है तथा उसका अधिकांश समय विद्यालय में ही व्यतीत होता है। प्रत्येक बालक का पालन-पोषण एवं विकास निश्चित वातावरण में होता है, उपयुक्त वातावरण नहीं मिलने पर अनेक प्रतिभाएँ अविकसित रह जाती हैं। अतः बालक को जैसा भौतिक वातावरण मिलता है। वैसी ही जन्मजात शक्तियाँ उसमें विकसित होती हैं। विद्यालय में विभिन्न आदतों, रुचियों, योग्यताओं एवं दृष्टिकोण के

बालक आते हैं। जैसे-जैसे बालक में शारीरिक एवं मानसिक विकास होता है, वह बाहरी वातावरण के सम्पर्क में आता है, जिससे बालक में कुछ शारीरिक तथा मानसिक परिवर्तन होता है। इन परिवर्तनों में विद्यालय वातावरण का प्रमुख योगदान होता है। समायोजन की प्रक्रिया एक जटिल प्रक्रिया होती है। इसका विकास बालकों में धीरे-धीरे होता है। फिर भी यदि इसमें कुछ बातों का विशेष ध्यान दिया जाये तो बालकों में समायोजन की भावना का विकास काफी आसान हो जाता है। सर्वप्रथम बालकों के समायोजन में परिवार की भूमिका होती है। इसके पश्चात विद्यालय तथा वहाँ का वातावरण बालकों के कुशल समायोजन के लिए उत्तरदायी है। अतः शिक्षक की भूमिका निःसन्देह सर्वोपरी है। शिक्षक बालकों को अपने सह-पाठियों के साथ मिलजुलकर पढ़ने तथा उनमें आपस में सहयोग की भावना के विकास के लिए प्रेरित कर सकता है। इस प्रकार शिक्षक, जो कि विद्यालय के वातावरण का एक महत्वपूर्ण अंग है। बालकों के समायोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। विद्यालय का वातावरण जितना उत्तेजक तथा शिक्षा प्रदान होता है, बालकों में समायोजन का विकास भी उसी गति से होता है। इसलिए विद्यालय वातावरण बालकों के शैक्षिक, सामाजिक एवं संवेगात्मक समायोजन को प्रभावित करता है।

अध्ययन की आवश्यकता :

भारत का अतीत अत्यन्त गौरवशाली है। देश धन-धान्य से पूर्ण था और शौर्य तथा पराक्रम में अद्वितीय था। भारत में अपार धन-सम्पदा इसलिए थी कि देश ज्ञान-विज्ञान से संपुष्ट था। भारत का वैभव उसकी शिक्षा पद्धति के कारण था। आज शिक्षा को विकास से जोड़ा जा रहा है कहा जा रहा है कि वह राष्ट्र आर्थिक रूप से विकसित है जो शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी है। आज का मानव अनेक परिस्थितियों से घिरा हुआ है। उसकी आवश्यकताएँ इस भौतिक युग में अन्नत हैं। वह अपने साधनों के द्वारा इन आवश्यकताओं की पूर्ति में लगा रहता है, परन्तु यह जटिल प्रश्न है कि क्या आज का मानव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकता है, जिसको वह प्राप्त करना चाहता है? यह आज की सामाजिक अव्यवस्थाओं को देखते हुए असम्भव प्रतीत होता है। फिर भी व्यक्ति समय के अनुसार अपने विवेक एवं बुद्धि से आवश्यकताओं की पूर्ति करता रहता है और अपना समायोजन स्थापित करता रहता है।

आज की शताब्दी मानव के विकास में अपना अनुठा स्थान रखती है।

ज्ञान के विस्फोट के साथ आज मानव व्यवहार की प्रक्रिया, उसकी रूचि, कार्य कुशलता, उपलब्धि स्तर, व्यक्तित्व विकास एवं समायोजन क्षमता आदि के साथ आबद्ध कर विद्यार्थियों का वैज्ञानिक रूप से अध्ययन किया जाने लगा है। आज बालकों की उपलब्धि अर्जन क्षमता, सकारात्मक वातावरण तथा समायोजन स्थापित करने की प्रवृत्ति का प्रश्न सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रश्न है। विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास तभी हो सकता है, जब विद्यालय वातावरण सकारात्मक हो, जिससे विद्यार्थी सही दिशा में समायोजित हो सके और जीवन को सही दिशा प्रदान कर सके। उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का समायोजन पर प्रभाव के अध्ययन को आधार बनाया गया है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य :

1. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण एवं समायोजन के मध्य सह-सम्बन्ध का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पना :

1. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
3. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण एवं समायोजन के मध्य सार्थक सह-सम्बन्ध नहीं होता है।

तकनीकी शब्दों की व्याख्या :

1. **विद्यालय वातावरण** : विद्यालय वातावरण वह तत्व है जो बालकों में सिखने की प्रक्रिया वर्ग या कक्षा के भौतिक वातावरण को प्रभावित करता है। इसके अन्तर्गत वे सभी व्यवस्थायें आती हैं, जो छात्र के मानसिक विकास में अहम है। जैसे विद्यालय भवन, रोशनी की व्यवस्था, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, फर्नीचर एवं खेल-मैदान आदि।
2. **समायोजन** : लक्ष्य प्राप्ति के लिए व्यक्ति द्वारा अनुकूल व प्रतिकूल परिस्थिति में वातावरण के साथ सामंजस्यपूर्ण व्यवहार समायोजन कहलाता है। यहां समायोजन से तात्पर्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक, सामाजिक एवं सर्वेगात्मक समायोजन से है।
3. **माध्यमिक विद्यालय** : ऐसे विद्यालय जिनमें कक्षा 9 व 10 तक के विद्यार्थियों को शिक्षण करवाया जाता है, माध्यमिक स्तर के विद्यालय कहलाते हैं।

न्यादर्श :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में राजस्थान के सीकर जिले के माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालय में अध्ययनरत कुल 400 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श तकनीक द्वारा किया गया है। इनमें 200 विद्यार्थी सरकारी विद्यालय से तथा 200 विद्यार्थी गैर-सरकारी विद्यालय से लिए गये हैं।

अध्ययन विधि :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है।

प्रयुक्त उपकरण :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में डॉ. ए.के.पी. सिन्हा तथा डॉ. आर.पी.सिंह द्वारा निर्मित स्कूली छात्रों के लिए समायोजन सूची को लिया गया है। तथा विद्यालय वातावरण के अध्ययन हेतु डॉ. करुणा शंकर मिश्र द्वारा निर्मित विद्यालय वातावरण परिसूची का प्रयोग किया गया है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी :

प्रस्तुत शोध अध्ययन के अन्तर्गत निर्धारित उद्देश्यों के संदर्भ में मध्यमान, मानक विचलन, क्रान्तिक अनुपात, सह-सम्बन्ध का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या :

परिकल्पना संख्या 1 – माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका – 1

क्र.सं.	विद्यालय के प्रकार	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
1	सरकारी	200	190.20	1.87	9.72	0.05
2	गैर-सरकारी	200	192.40	1.37		स्तर पर सार्थक

$$(df = N_1 + N_2 - 2 = 200 + 200 - 2 = 398)$$

उपरोक्त तालिका संख्या 1 में माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण से सम्बन्धित आंकड़ों का मध्यमान क्रमशः 190.20 व 192.40 तथा मानक विचलन क्रमशः 1.87 व 1.37 प्राप्त हुआ है। प्राप्तांकों की गणना के आधार पर क्रान्तिक अनुपात का मान 9.72 प्राप्त हुआ है। जो स्वतंत्रता के अंश 398 एवं 0.05 विश्वास स्तर पर सारणी में दिये गये मान 1.97 से अधिक है। अतः इससे स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर-सरकारी विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण में सार्थक अन्तर है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना संख्या 2 – माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका – 2

क्र.सं.	विद्यालय के प्रकार	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक मान	सार्थकता स्तर
1	सरकारी	200	16.92	2.25	3.37	0.05
2	गैर-सरकारी	200	17.67	2-20		स्तर पर सार्थक

$$(df = N_1 + N_2 - 2 = 200 + 200 - 2 = 398)$$

उपरोक्त तालिका संख्या 2 में माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन से सम्बन्धित आंकड़ों का मध्यमान क्रमशः 16.92 एवं 17.67 तथा मानक विचलन क्रमशः 2.25 एवं 2.20 प्राप्त हुआ है। प्राप्तांकों के आधार पर गणना द्वारा क्रान्तिक अनुपात मान 3.37 प्राप्त हुआ है। जो स्वतंत्रता के अंश 398 एवं 0.05 विश्वास स्तर पर सारणी में दिये गये मान 1.97 से अधिक है। अतः इससे स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमानों में सार्थक अंतर है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना संख्या 3 – माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण एवं समायोजन के मध्य सार्थक सह-सम्बन्ध नहीं होता है।

मल्टीडिसीप्लिनरी एज्यूकेशन एण्ड रिसर्च, वोल्यूम 1, अंक 2, अप्रैल 2016, पेज नं. 31-34

तालिका – 3

समूह	न्यादर्श	सह-सम्बन्ध गुणांक का मान (r)	सार्थकता स्तर
विद्यालय वातावरण व समायोजन	400	+0.25	0.05 स्तर पर सार्थक

$$(df = N_1 + N_2 - 2 = 200 + 200 - 2 = 398)$$

सारणी संख्या 3 में माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर-सरकारी विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण एवं समायोजन के मध्य सह-सम्बन्ध को दर्शाया गया है। प्राप्त आंकड़ों की गणना से सह-सम्बन्ध का मान +0.25 प्राप्त हुआ है। जो स्वतंत्रता के अंश 398 पर सारणी मूल्य 0.098 से अधिक है। अतः दोनों चरों में सार्थक धनात्मक सह-सम्बन्ध है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष :-

- माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर-सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण में सार्थक अंतर होता है। अर्थात् सरकारी विद्यालयों की अपेक्षा गैर-सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों का विद्यालय वातावरण उच्च पाया गया है।
- माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर-सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अंतर होता है। अर्थात् सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की अपेक्षा गैर-सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी अधिक समायोजित पाये गये।
- माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर-सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण एवं समायोजन में घनात्मक सह-सम्बन्ध पाया गया। अर्थात् विद्यालय वातावरण उच्च कोटि का होने पर छात्रों की समायोजन क्षमता भी उच्च होती है तथा विद्यालय वातावरण निम्न कोटि का होने पर समायोजन की क्षमता भी निम्न कोटि की होती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

- बेस्ट, जॉन डब्ल्यू (1963): शिक्षा में शोध, प्रेन्टिस हॉल ऑफ इण्डिया प्रा0लि0, नई दिल्ली
- मंगल, एस.के. (1996): शिक्षा मनोविज्ञान, प्रकाश ब्रदर्स, लुधियाना।
- कपिल, एच.के. (2004): "अनुसंधान विधियाँ", हर प्रसाद भार्गव पुस्तक प्रकाशन, आगरा।
- राय, पारसनाथ (2012): "अनुसंधान परिचय" लक्ष्मी नारायण अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा
- सिंह, अरूण कुमार (2013): 'मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ' मोतीलाल बनारसीदास पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
- गैरेट, हेनरी ई. (2014): 'शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग' कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
- अग्रवाल श्वेता (2015): "उच्च माध्यमिक विद्यालय के बालक एवं बालिकाओं का संघटनात्मक वातावरण एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन" शिक्षा चिन्तन शोध पत्रिका, नोएडा, अंक जुलाई-सितम्बर 2015, पेज नं. 14-22
- सिंह, नीलू (2016): विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन पर विद्यालय वातावरण द्वारा पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन" इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ

- खींची, पूजा (2017): "उच्च माध्यमिक एवं माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का विद्यालय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सह-सम्बन्ध का अध्ययन" एम.एड. शोध प्रबंध (2015-17) बियानी ग्लर्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर।
- नायक, पी.के. (2018): "उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शालेय वातावरण का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपबलिध पर प्रभाव का अध्ययन" इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ एडवान्स एज्यूकेशन एण्ड रिसर्च, वोल्यूम 3, अंक 3, मई 2018, पेज नं. 28-30